हरतालिका तीज कथा — पार्वती का पुनर्कथन

Hartalika Teej Katha — Parvati Retelling

Source: Vrataraja — 1897 controlling Sanskrit scan, Balmeeki Campus collection. Also compared: 1897 opening — physical scan 112, numbered katha after preliminary worship text; 1897 closing — physical scan 117, verse 76, colophon and separate udyapana opening; Vrataraja — catalogued 1884 lithographic comparison, physical scans 141–147; 1897 Archive metadata — edition identity and recorded digitisation licence; Creative Commons CC0 — digitisation notice, not modern-translation clearance.

Valkala's own retelling of the katha in Vishvanatha Sharma's Vrataraja, 1897 Sanskrit print, Haritalika katha 1–76 (compiler's Bhavishyottara Purana, Hara-Gauri dialogue attribution), not a transcription of the original text.

शिव-पार्वती संवाद और पार्वती का संकल्प

KATHA 1–20

सूत के आरम्भिक कथन और मंगलभाव के बाद कैलास का प्रसंग आता है। पार्वती शिव से पूछती हैं कि उन्हें पति रूप में कैसे पाया गया और कौन-सा व्रत इस प्रसंग में श्रेष्ठ कहा जाता है। शिव भाद्रपद शुक्ल तृतीया और हस्त नक्षत्र से जुड़े व्रत का नाम बताते हैं। वे उसकी महिमा समझाने के लिए पवित्र स्थान, नदियों, देवताओं और प्राचीन सामाजिक पदक्रम की उपमाएँ देते हैं। ये पुराने पाठ की तुलना और प्रशंसा हैं, आज के लोगों का मूल्य तय करने का आधार नहीं; तिथि-नक्षत्र का उल्लेख भी किसी वर्ष और स्थान का पंचांग नहीं है।

पार्वती अपने पूर्व प्रसंग को विस्तार से सुनना चाहती हैं। शिव हिमालय का सुंदर, नदियों, वन, दिव्य प्राणियों और रत्नों से समृद्ध वर्णन करते हैं। वहीं पार्वती ने बाल्यकाल से उन्हें पाने के लिए कठोर तप किया था। कथा धुएँ, उलटी स्थिति, पत्तों पर निर्वाह और लंबे वर्षों की तपस्या कहती है। फिर शीत ऋतु में जल, गर्मी में भीषण तप और वर्षा में खुले स्थान पर रहने जैसे कठिन प्रसंग आते हैं। अवधि की कठिन पंक्ति को यहाँ निश्चित संख्या में नहीं बदला गया है। बेटी की इस स्थिति से हिमवान चिंतित थे।

यह पार्वती के संकल्प का अलौकिक कथानक है, बच्चों या वयस्कों के लिए तप की अभ्यास-विधि नहीं। धुआँ, उलटा लटकना, भूख-प्यास अथवा चरम मौसम में रहना इस पाठक का निर्देश नहीं है।

After Suta's opening and auspicious invocation, the scene moves to Kailasa. Parvati asks Shiva how she obtained him as her husband and which vow is praised in that connection. He names an observance associated with Bhadrapada Shukla Tritiya and Hasta. To praise it he compares sacred places, rivers, deities and ranks within the old social hierarchy. These are the text's comparisons, not a measure of people's worth today; its tithi and nakshatra reference is not a calendar for a particular year and location.

Parvati asks to hear her earlier history in detail. Shiva describes the Himalaya's beauty, rivers, forests, divine beings and treasures. There she had undertaken severe penance from childhood to obtain him. The narrative mentions smoke, an inverted posture, subsistence on leaves and prolonged austerity, followed by water in winter, severe exposure in summer and remaining outdoors in the rains. A difficult duration line is not converted into a definite number here. Himavan is worried about his daughter.

This is a supernatural account of Parvati's resolve, not austerity training for children or adults. Smoke, hanging upside down, deprivation and exposure to extreme weather are not instructions from this reader.

विवाह का प्रस्ताव और सखी का साथ

KATHA 21–40

नारद हिमवान के पास आए। स्वागत के बाद उन्होंने विष्णु की ओर से पार्वती के विवाह का प्रस्ताव रखा और उनकी महिमा का वर्णन किया। हिमवान ने सहमति दी। नारद ने लौटकर विष्णु को बताया कि प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है। जब पार्वती को पिता का निर्णय पता चला, वे अत्यंत दुखी होकर गिर पड़ीं और रोने लगीं।

उनकी सखी ने दुख का कारण पूछा। पार्वती ने कहा कि वे शिव को पति रूप में पाने के लिए तप कर रही थीं, लेकिन पिता उन्हें दूसरे के साथ विवाह के लिए देना चाहते हैं। इस संकट में वे अपनी इच्छा पूरी न होने पर मृत्यु तक की बात कहती हैं। यह कथा में चरम निराशा की अभिव्यक्ति है, आत्महानि का समर्थन या प्रेम सिद्ध करने की शर्त नहीं। सखी ने उन्हें सांत्वना दी और ऐसे वन में साथ ले जाने का आश्वासन दिया जहाँ इस विवाह का दबाव उन तक न पहुँचे।

पार्वती सखी के साथ चली गईं। उन्हें न पाकर हिमवान व्याकुल हुए। उन्हें लगा कि कोई उन्हें ले गया होगा; नारद के सामने किए वचन की चिंता भी थी। उन्होंने लोगों को खोजने भेजा और स्वयं भी खोज की। कथा वन के हिंसक प्राणियों और अन्य खतरों के कारण पिता की चिंता बताती है। इस प्रसंग का केन्द्र पार्वती की व्यक्त इच्छा, मित्र का सहारा और पिता की चिंता है, जबरन विवाह या अपहरण की स्वीकृति नहीं।

Narada visits Himavan. After being welcomed, he brings Vishnu's marriage proposal for Parvati and praises him. Himavan agrees, and Narada returns to tell Vishnu that the proposal has been accepted. Learning her father's decision, Parvati collapses in distress and weeps.

Her friend asks why. Parvati explains that her penance has been directed towards Shiva, but her father intends to give her in marriage to someone else. In her distress she speaks of death if her wish cannot be fulfilled. This expresses extreme despair within the story, not support for self-harm or a condition for proving love. Her friend comforts her and offers to accompany her to a forest refuge beyond the pressure of this marriage arrangement.

Parvati leaves with her friend. Unable to find her, Himavan becomes anxious, fearing someone has taken her away and worrying about his promise to Narada. He sends people to search and searches himself. Wild animals and other forest dangers intensify his concern. The episode centres on Parvati's expressed choice, a friend's support and a father's worry; it does not approve forced marriage or abduction.

वन में पूजा, वरदान और पिता की सहमति

KATHA 41–54

पार्वती और सखी घने वन में नदी के पास एक गुफा तक पहुँचीं। पार्वती ने रेत का शिवलिंग बनाया, जिसमें पार्वती के साथ शिव का पूजन वर्णित है। भाद्रपद की तृतीया और हस्त के प्रसंग में उन्होंने पूजा की और रात गायन में बिताई। कथा कहती है कि इस आराधना से शिव का आसन हिला और वे प्रकट हुए। उन्होंने वर माँगने को कहा। पार्वती ने उन्हें ही पति रूप में माँगा; शिव ने स्वीकार किया और अंतर्धान हो गए।

सुबह पूजा का नदी में विसर्जन और सखी के साथ पारण का उल्लेख है। उसी समय खोजते हुए हिमवान पहुँचे। उन्होंने बेटी को गले लगाया और पूछा कि वह ऐसे दुर्गम वन में क्यों आई। पार्वती ने शिव को पाने के लिए किए तप और अपने निर्णय की बात कही। उन्होंने कहा कि वे तभी घर लौटेंगी जब पिता उनका विवाह शिव से करने को सहमत होंगे। हिमवान ने स्वीकार किया, उन्हें घर ले गए और विवाह कराया। शिव के कथन में इसी तरह पार्वती उनकी प्रिय पत्नी बनीं।

कथा आगे इस व्रत की गोपनीय महिमा कहती है और नाम समझाती है: सखी पार्वती को वहाँ से ले गई थी, इसलिए हरितालिका कहा गया। यह पाठ की पारंपरिक व्याख्या है, स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक प्रमाण नहीं। इस पुनर्कथन से वन में अकेले जाना, नदी में प्रवेश, विसर्जन, उपवास या रात भर जागना अनिवार्य नहीं होता।

Parvati and her friend reach a cave near a river in the dense forest. Parvati makes a sand linga; the source describes worship of Shiva with Parvati. In its Bhadrapada Tritiya and Hasta setting, she worships and spends the night singing. The narrative says Shiva's seat is shaken by this devotion and he appears, inviting her to ask a boon. She asks for him as her husband. He agrees and disappears.

The morning brings immersion of the worship object in the river and breaking the fast with her friend. Himavan arrives while searching, embraces his daughter and asks why she entered such an inaccessible forest. Parvati explains her penance and choice. She will return only if he agrees to her marriage with Shiva. He accepts, takes her home and arranges the marriage. Shiva says this is how she became his beloved wife.

The account then calls the vow's glory secret and explains its name through the friend's taking Parvati away, hence Haritalika. This is the text's traditional explanation, not independent linguistic proof. The retelling does not require entering a forest alone, going into a river, immersion, fasting or staying awake all night.

प्रार्थना, भेंट और पुराने फल-दंड कथन

KATHA 55–76

पार्वती अब विधि, फल और इस व्रत को करने वालों के बारे में पूछती हैं। शिव सौभाग्य चाहने वाली स्त्रियों के प्रसंग में एक सजा हुआ मंडप, केले के खंभे, वस्त्र, चंदन, शिव-पार्वती की पूजा और उपलब्ध फल-भोजन की भेंट बताते हैं। फिर दोनों देवों के प्रति नमस्कार और उनके गुणों के स्मरण वाली प्रार्थनाएँ आती हैं। कथा ब्राह्मणों को भोजन और भेंट, दूसरी पुराण-कथाएँ सुनने तथा पूजा के समापन का उल्लेख करती है। यहाँ ये सभी बातें पुराने संवाद की संक्षिप्त रिपोर्ट हैं, आज की पूजा की अनिवार्य सामग्री, सामाजिक पात्रता या मंत्र-क्रम नहीं।

फल-वर्णन में राज्य, जन्मों तक सौभाग्य और शिव के निकट होने जैसे धार्मिक आश्वासन हैं। इसी भाग में व्रत के दिन भोजन करने पर वैधव्य, गरीबी, संतान की हानि और नरक जैसी बहुत कठोर धमकियाँ भी हैं। उन्हें छिपाकर सुखद अंत नहीं बनाया गया है, लेकिन उनका समर्थन भी नहीं किया गया है। कोई वास्तविक शोक, गरीबी या संतान-संबंधी कठिनाई भोजन करने या पूजा न करने का दंड नहीं ठहराई जा सकती। किसी व्यक्ति पर भय से व्रत थोपना इस पाठक का उद्देश्य नहीं है।

कथा पात्र में भोजन की भेंट और समापन भी कहती है। अंतिम प्रशंसा सुनने-पढ़ने के पुण्य को अश्वमेध, वाजपेय और अनेक यज्ञों के फल से तुलना करती है। फिर भविष्योत्तरपुराण में हर-गौरी संवाद की हरितालिका व्रत-कथा का समापन-वाक्य आता है। यही पूरा चयनित प्रसंग है। इसके बाद अलग संख्या से आरम्भ होने वाला उद्यापन अध्याय यहाँ शामिल नहीं है। प्रार्थना स्वैच्छिक है; यह पाठ विवाह, संतान, दीर्घायु, धन या परलोक का परिणाम सुनिश्चित नहीं करता।

Parvati now asks about the observance, its fruits and its participants. In the setting of women seeking marital good fortune, Shiva describes a decorated pavilion, banana supports, cloth, sandalwood, worship of Shiva-Parvati and offerings of fruit and food. Prayers greet both deities and recall their qualities. The account mentions feeding and giving to Brahmins, hearing other Purana narratives and concluding the worship. These are condensed reports of the old dialogue, not compulsory modern materials, social eligibility rules or a mantra sequence.

The benefit discussion speaks of a kingdom, marital good fortune across births and closeness to Shiva. It also threatens widowhood, poverty, loss of children and hell for eating on the vow's day. These harsh statements are not hidden to manufacture a pleasant ending, but neither are they endorsed. Real grief, poverty or difficulties concerning children cannot be judged punishment for eating or not worshipping. This reader does not impose a vow through fear.

The text also mentions a food-filled vessel as a concluding gift. Its final praise compares the merit of hearing and reading with Ashvamedha, Vajapeya and numerous sacrifices. The colophon closes the Haritalika vow story in the Bhavishyottara Purana's Hara-Gauri dialogue. That concludes the complete selected account. The separately numbered udyapana chapter that follows is excluded. Prayer is voluntary; this reader guarantees no marriage, children, longevity, wealth or afterlife result.